Re: Inclusion of traditional craft in the educational syllabus- laid

श्री विवेक नारायण शेजवलकर (ग्वालियर): सदियों से परपंरागत तौर से अपने विभिन्न उपकरणों, हाथ और औजारों से काम करने वाले कारीगरों और शिल्पकारों ने भारत को सदैव गौरवान्वित किया है। भारत की महान संस्कृति पर इनकी कला व कौशल की गहरी छाप है। इस बार बजट में पीएम विश्वकर्मा कौशल सम्मान योजना' की शुरूआत की गई है।

इस योजना से ये लोग अपने-अपने उत्पादों की गुणवत्ता, पहुंच, व संख्या में वृद्धि कर सकते है। वित्तीय सहायता के अलावा उन्नत कौशल प्रशिक्षण, अत्याधुनिक प्रभावशाली व डिजिटल प्रौद्योगिकियों तक इनकी पहुंच होगी। स्थानीय व वैश्विक बाजारों से जुडाव, ब्राण्ड संवर्धन व सामाजिक सुरक्षा की गारंटी सरकार इन्हें देगी। इनके द्वारा तैयार किये जाने वाले उत्पादों से आत्म निर्भर भारत की भावना को बढावा मिलेगा। इन विश्वकर्माओं में अधिकतर लोग अनुसूचित जातियां, अनुसूचित जन जातियां, ओ.बी.सी. महिलायें व समाज के सभी वर्गों के कमजोर तबके से आते है। आर्थिक दृष्टि से कमजोर एक बहुत बड़े वर्ग को इस योजना से अपना जीवन स्तर उंचा उठाकर सबके साथ चलने का अवसर प्राप्त होगा। इसके लिए देश के यशस्वी प्रधानमंत्री जी एवं वित्त मंत्री जी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

क्या सरकार पारंपरिक शिल्पकला को शैक्षणिक पाठ्यक्रम में शामिल करने पर विचार कर रही है ?